B - IV
L - 21
Economy.

मुद्रा और बैंकिंग (Money and Banking)

मुद्रा क्या है ?

मुद्रा कोई भी एक ऐसी वस्तु होती है जिसे लोग लेन-देन के लिए सामान्य रूप से स्वीकार करते हैं।

इस प्रकार, सामान्य स्वीकार्यता मुद्रा का एक मुख्य लक्षण होता है।

मुद्रा के मुख्य कार्य :-

(i) विनिमय का माध्यम।
(Medium of exchange)

(ii) मूल्य का भण्डार।
(Store of Value)

(iii) लेखांकन की एक इकाई।
(A Unit of Account)

मुद्रा (money) और चलन (currency) में अंतर :-

मुद्रा एक व्यापक अवधारणा है जिसमें चलन के साथ-साथ कुछ अन्य घटकों को भी

सम्मिलित किया जाता है जैसे कि मांग-जमायें (Demand Deposit) आदि।

चलन में निम्न दो को सम्मिलित किया जाता है -

(i) Bank Notes (बैंक नोट)

(ii) Coins (सिक्के)

मुद्रा और चलन के अंतर को एक चित्र द्वारा दिखाया जा सकता है -

कितनी भी सीमा में स्वीकार करना अनिवार्य।

Unlimited legal Tender

Bank Note

Coines

↓

Limited legal tender

(सीमित वैधानिक मुद्रा)

↓

एक सीमा तक ही स्वीकार करना अनिवार्य।

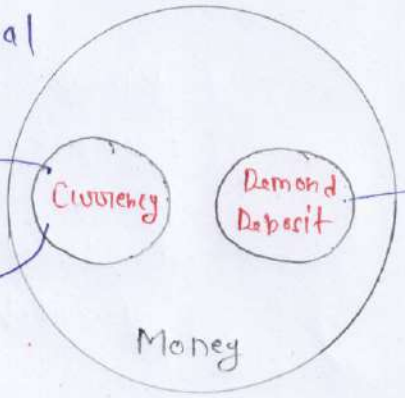

चेक आदि जारी किए जा सकते हैं।

मुद्रा की माँग :-

मुद्रा की माँग निम्न दो बातों पर निर्भर करती है -

(i) आय का स्तर (Income level)

(ii) ब्याज दर का स्तर (Interest Rate level)

मुद्रा की माँग और आय में सीधा संबंध होता है अर्थात-

(i) यदि आय बढ़ती है तो मुद्रा की माँग भी बढ़ती है।

(ii) यदि आय कम होती है तो मुद्रा की मांग भी कम हो जाती है।

इसी प्रकार, मुद्रा की माँग और ब्याजदर में विपरीत संबंध होता है अर्थात-

(i) ब्याज दर बढ़ती है तो मुद्रा की माँग कम हो जाती है।

(ii) ब्याजदर कम होती है तो मुद्रा की माँग बढ़ जाती है।

आय के एक निश्चित स्तर पर अलग-अलग ब्याज दरों पर मुद्रा की माँग को एक चित्र द्वारा दिखाया जा सकता है-

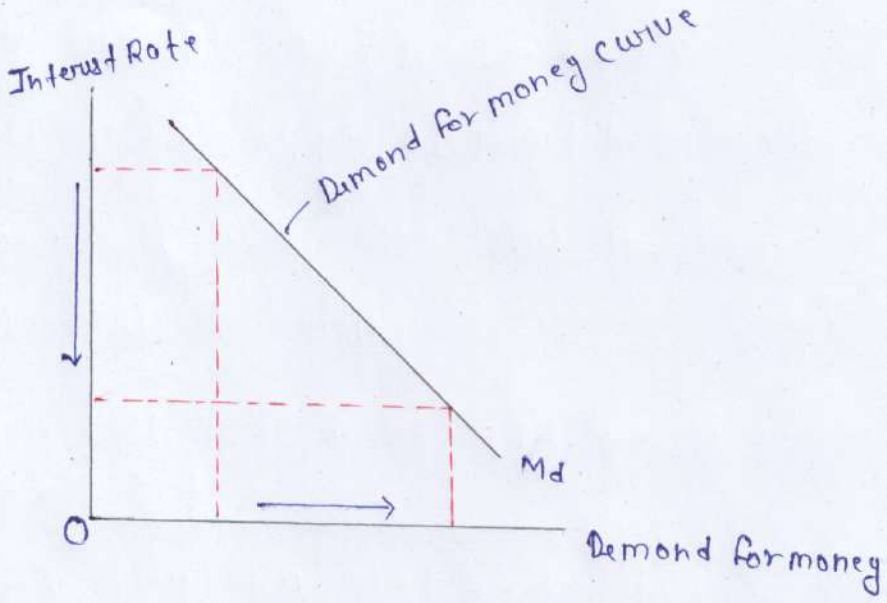

मुद्रा की आपूर्ति (Money Subply) :

केन्द्रीय बैंक द्वारा निर्धारित की जाती है। इसे निम्न प्रकार दिखाया जा सकता है-

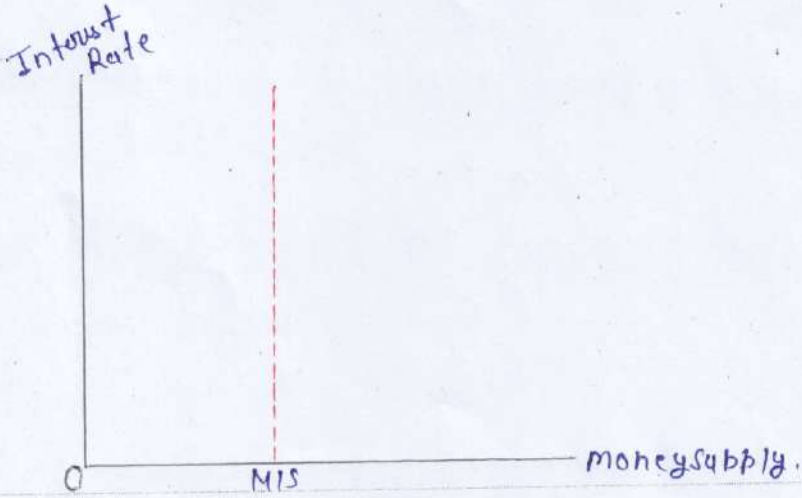

ब्याज दर का निर्धारण :

निम्न चित्र का प्रयोग किया जा सकता है-

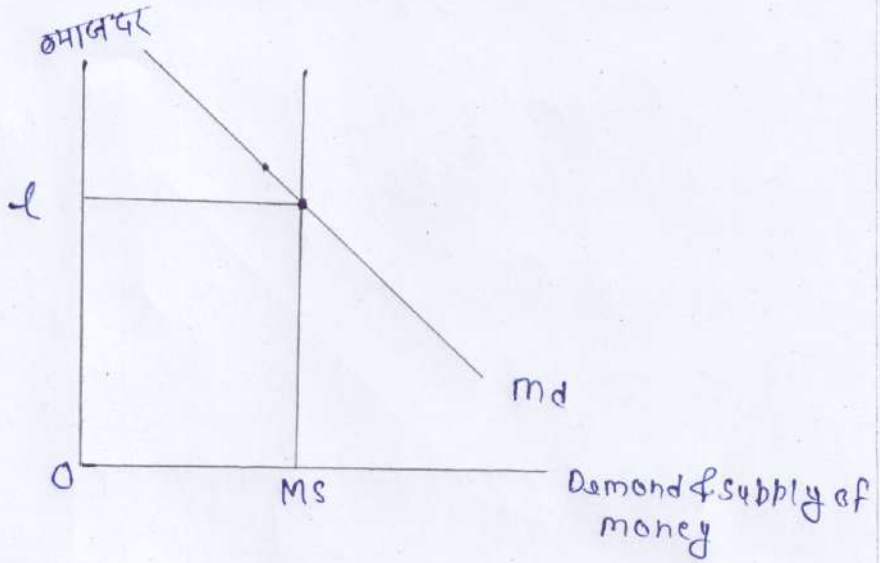

मुद्रा की माँग का बढ़ना और ब्याजदर पर प्रभाव, जबकि मुद्रा की आपूर्ति स्थिर रहे।

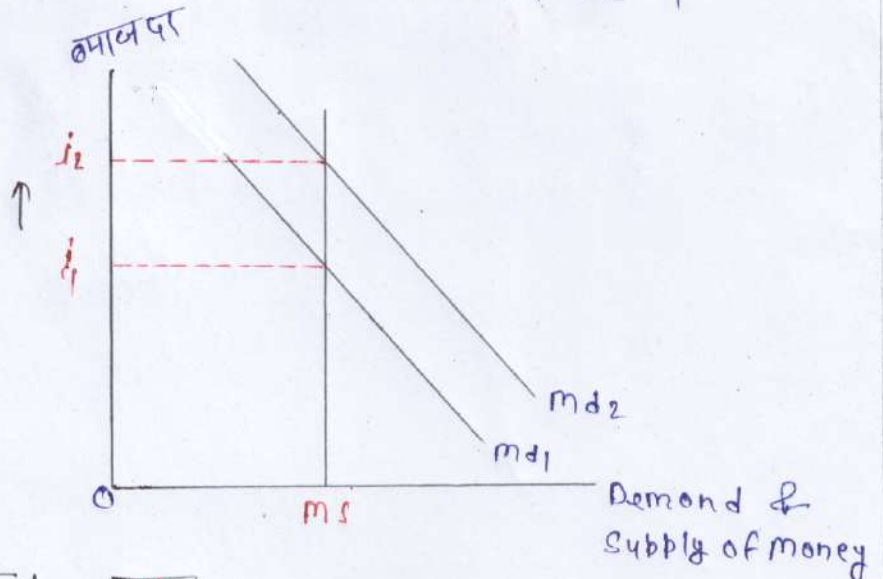

निष्कर्ष : $\uparrow L$

ब्याज दर में बढ़ोतरी होगी।